

डॉ. अयो अदेवुया , 2 कुरिन्थियों, सत्र 9, 2 कुरिन्थियों 8, देने का अनुग्रह

© 2024 आयो एडेवुया और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 9, 2 कुरिन्थियों 8, देने का अनुग्रह है।

अगले दो सत्रों में, हम 2 कुरिन्थियों 8 और 9 पर विचार करेंगे, लेकिन फिर, क्योंकि दोनों खंड एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, इसलिए हम एक सामान्य परिचय देना चाहते हैं।

इन दो अध्यायों, 8 और 9 में, पौलुस संग्रह के मुद्दे पर चर्चा करता है, जिसने उसके प्रेरितिक मंत्रालय में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालाँकि पौलुस ने किसी भी तरह से अपने लिए, व्यक्तिगत समर्थन के लिए धन की माँग नहीं की, फिर भी उसने लगभग 10 साल उस चीज़ के लिए धन की माँग करने में बिताए जिसे आम तौर पर संग्रह के रूप में संदर्भित किया जाता है। 2 कुरिन्थियों 7:1 की तरह, ये दो अध्याय एक विषयांतर का रूप लेते हैं, लेकिन वे पत्र के व्यावहारिक बिंदु को समग्र रूप से व्यक्त करते हैं।

इस प्रकार, वे पॉल के धर्मशास्त्र में महत्वपूर्ण हैं। अधिक विशेष रूप से, ये अंश प्रेरित के रूप में अपनी ईमानदारी के बचाव में अपने समग्र तर्क के एक भाग के रूप में कुरिन्थ में चर्च के साथ पॉल के रिश्ते के लिए प्रासंगिक हैं। वास्तव में, न्यू टेस्टामेंट के विद्वान बेन विदरिंगटन उन्हें एक साहसी बयानबाजी वाला कदम कहते हैं।

इसी तरह से वह 2 कुरिन्थियों 8 और 9 को देखता है। मुझे लगता है कि मैं इससे सहमत हूँ। इस बिंदु तक, पॉल कुरिन्थियों के साथ अपने रिश्ते में, इसे इस तरह से कहें तो, बहुत सावधानी से चल रहा था। और, बेशक, उनकी सबसे हालिया गलतफहमी अभी-अभी सुलझ गई है।

लेकिन प्रेरित पौलुस अपने गैर-यहूदी चर्चों और यरूशलेम में यहूदी मातृ चर्च के बीच संबंधों के लिए अपने व्यापक दृष्टिकोण के हित में यह सब जोखिम उठाने को तैयार है। इसलिए, हम अध्याय 8 और 9 में पाते हैं कि पौलुस ने कुरिन्थियों को यरूशलेम में गरीब संतों के लिए लंबे समय से विलंबित भेंट को पूरा करने के लिए अपने आग्रह का जवाब देकर अपनी वास्तविकता और उस पर अपने विश्वास को प्रदर्शित करने का एक और अवसर प्रदान किया। आप देखिए, जो हुआ वह यह है कि पौलुस और कुरिन्थियों के बीच खराब संबंधों के कारण, कुरिन्थियों ने कुछ समय के लिए काम करना बंद कर दिया है।

पॉल ने गैर-यहूदी चर्चों के बीच चंदा इकट्ठा किया था, और यह खास तौर पर यरूशलेम चर्च के लिए था, जहाँ 40 के दशक के मध्य से लेकर अंत तक के दौरान इस क्षेत्र में आए अकाल के कारण विश्वासियों को कठिन समय का सामना करना पड़ रहा था। इस चंदे का उद्देश्य दोहरा था। सबसे पहले, इसे यरूशलेम चर्च की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बनाया गया था, इसलिए यह दुनिया भर के विश्वासियों की परस्पर निर्भरता की अभिव्यक्ति है।

दूसरा, यह चर्च की प्रकृति को एक ऐसे निकाय के रूप में प्रदर्शित करना था जो राष्ट्रीय और भौगोलिक सीमाओं से परे है, जिसे आज भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। यह संग्रह यहूदियों की अपेक्षा से संबंधित है कि अंतिम दिनों में, अन्यजाति उपहारों के साथ यरूशलेम आएंगे, इसलिए यह सुसमाचार के सार का एक ठोस प्रतिनिधित्व था, कि मसीह में सभी समान हैं। अर्थात्, मसीह में, न तो यहूदी है और न ही यूनानी, न ही बर्बर और न ही स्कूती, न ही दास और न ही स्वतंत्र, न ही नर और न ही नारी, जैसा कि हम गलातियों 3:28 में देखते हैं। संग्रह का समय अपने आप में बहुत शिक्षाप्रद है।

पॉल ने तब तक चंदे के बारे में नहीं लिखने का फैसला किया जब तक कि उसे यकीन न हो जाए कि उसके और कुरिन्थियों के बीच कुछ लंबित मुद्दे अब सुलझ गए हैं, जिसका नतीजा वह आत्मविश्वास है जो उसने 7.16 में दिखाया। आप देखिए, यहीं पादरी की समझदारी है। जब चर्च में चीजें ठीक नहीं चल रही हों तो आप धन नहीं जुटाते। जब समस्याओं को सुलझाना होता है, तो यह महत्वपूर्ण है कि पॉल तब तक इंतजार करे जब तक कि चीजें सुलझ न जाएं, और फिर यह भी महत्वपूर्ण है कि खंड की शुरुआत और अंत इस बात से हो कि परमेश्वर ने मसीह में क्या किया है।

और यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक समावेशन प्रतीत होता है। यह इस बात से शुरू होता है कि परमेश्वर ने मसीह में क्या किया है।

यह 8.1 में ईश्वर की कृपा से शुरू होता है और फिर 9.15 में ईश्वर की कृपा से समाप्त होता है। तो आप पाएंगे कि ये दो आयतें मिलकर एक ऐसा रूप बनाती हैं जिसे हम इंकलूसियो कहते हैं। इन बातों को ध्यान में रखना चाहिए। इसलिए, अध्याय 8-9 में, पॉल अब संग्रह की ओर मुड़ता है, जिसे वह गरीबों की सहायता या यरूशलेम समुदाय में आर्थिक स्थिति के लिए राहत के लिए गलातिया, अखिया, एशिया और मैसेडोनिया में अपने मिशनरी चर्चों के बीच बढ़ावा दे रहा है।

इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, हम एक और बात पर ध्यान दें। यहाँ पौलुस यरूशलेम में विश्वासियों की ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश कर रहा है। हमेशा से इस बात पर चर्चा होती रही है कि यह सुसमाचार प्रचार होना चाहिए या सामाजिक कार्य।

यह एक गलत विरोधाभास है। धर्म प्रचार और सामाजिक कार्य एक साथ चलते हैं। यह महत्वपूर्ण है।

मैं जॉन वेस्ले के शब्दों को उधार लेता हूँ। सामाजिक पवित्रता के बिना कोई पवित्रता नहीं है। जब हम पवित्रता की बात करते हैं, तो सामाजिक पवित्रता भी होती है।

दूसरे शब्दों में, हमें इसमें शामिल होने की ज़रूरत है। यहाँ पॉल उस काम में शामिल हो रहा है जिसे हम राहत कार्य कहेंगे। मेरा मतलब है, आज ईसाईजगत का एक वर्ग राहत कार्य को कम महत्व देता है और कहता है, ठीक है, हमें बस लोगों की आत्माओं का ख्याल रखना है, और परमेश्वर उनकी ज़रूरतों का ख्याल रखेगा।

यह या तो या नहीं है; यह दोनों है, और। जैसा कि मैं कभी-कभी कहता हूँ, लोगों को उपदेश देने से पहले, लोगों को सामन मछली दें। आप सामन मछली देते हैं।

देखिए, धर्मोपदेश से पहले उन्हें कुछ सामन मछली खिलाइए। सामन खाने के बाद, शायद वे धर्मोपदेश सुनने के लिए तैयार हो जाएँ। यह सिर्फ़ एक बात है।

लेकिन कम से कम हम पॉल से यह बात तो सीखते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन निश्चित रूप से, संग्रह के प्रति उनके दृष्टिकोण में कुरिन्थियों के साथ चीजें खराब हो गई हैं।

क्योंकि चीजें ठीक नहीं थीं, इसलिए उन्होंने इसे रोक दिया। लेकिन यह भेंट बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस की प्रेरितिक सेवकाई में यह बहुत महत्वपूर्ण रही है।

हम यह क्यों जानते हैं? यरूशलेम में अपने लिए आने वाले खतरों के बावजूद वह अपने व्यक्तिगत उद्धार में लगा रहा। हम इसे प्रेरितों के काम अध्याय 20, पद 3 और पद 23, और अध्याय 21, पद 4, पद 10 से 15 में देखते हैं। जब पौलुस ने मातृ कलीसिया को वित्तीय सहायता देने का अपना वादा पूरा करने की कोशिश की, तो संग्रह परियोजना पुराने नियम की वाचा की नैतिकता के साथ निरंतरता में थी।

हम इसे लैव्यव्यवस्था अध्याय 19, श्लोक 17 से 18, और मीका अध्याय 6, श्लोक 8 में देखते हैं। और, बेशक, यहूदी धर्म में दान का अभ्यास। आप इसे मैथ्यू अध्याय 6, श्लोक 2 में देखते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह संग्रह गरीबों की सहायता के बारे में यीशु की शिक्षा के अनुरूप था। मैथ्यू अध्याय 5, श्लोक 42, अध्याय 6, श्लोक 2 में। यीशु ने अपने शिष्यों के बीच आपसी संबंधों की प्रकृति के बारे में सिखाया।

तो, पौलुस क्या करता है? पौलुस ने ऐसे सहज भाईचारे वाले प्रेम को बनाए रखा, जो अब पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर के साथ एक नए संबंध द्वारा ईसाई नैतिकता के केंद्र में है। साथी विश्वासियों की ज़रूरतों के लिए पौलुस की चिंता एक अनोखी संगति की अभिव्यक्ति थी जिसका वे सभी मसीह में आनंद लेते थे। आप देखिए, इस बुनियादी व्यावहारिक महत्व से परे, यह संग्रह पौलुस के लिए धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण था।

यह यहूदियों और गैर-यहूदी विश्वासियों से बनी कलीसिया की एकजुटता का एक धार्मिक प्रदर्शन होगा। उनकी परस्पर निर्भरता, उनका आध्यात्मिक ऋण, यरूशलेम में कलीसिया के प्रति गैर-यहूदियों का आध्यात्मिक ऋण, साथ ही मसीह में यहूदी और गैर-यहूदी की एकता और समानता, ठोस रूप से प्रकट या प्रदर्शित होगी। पॉल को शायद उम्मीद थी कि यह संग्रह गैर-यहूदी मिशन के बारे में यहूदियों के संदेह को दूर करेगा।

फिर भी, यह किसी तरह का ईसाई मंदिर कर नहीं था। यह ऐसा नहीं है। यह मदर चर्च की श्रेष्ठता की अंतर्निहित मान्यता नहीं है, नहीं, न ही यह मुख्य रूप से गैर-यहूदी ईसाइयों की यरूशलेम की एक अंतिम तीर्थयात्रा थी, जिसका उद्देश्य अविश्वासी यहूदियों को उद्धार की वास्तविकता, गैर-यहूदियों को उद्धार के उपहार से रूबरू कराना था, या उन्हें ईर्ष्या के माध्यम से सुसमाचार स्वीकार करने के लिए प्रेरित करना था।

इस उपहार का उद्देश्य बिल्कुल भी ऐसा नहीं है। पौलुस सिर्फ वही कर रहा था जो उसे करना चाहिए था, जब वह कलीसियाओं की मदद कर रहा था। पौलुस का मानना था कि यहूदियों की आध्यात्मिक आशीषों में हिस्सा लेने वाले अन्यजातियों का दायित्व था कि वे भौतिक आशीषों में उनकी सेवा करें, और उसे उम्मीद थी कि यरूशलेम में कलीसिया परमेश्वर की महिमा करने के लिए आगे बढ़ेगी।

हम इसे अध्याय 9, श्लोक 12 से 14 में बाद में देखते हैं। इस संग्रह में उन्हें मसीह के शरीर के समान विशेषाधिकार प्राप्त सदस्यों के रूप में उनके बीच संगति के बंधन की वास्तविकता को देखने के लिए मजबूर करने की क्षमता थी। वास्तव में, पौलुस रोमियों से उसके साथ प्रार्थना करने के लिए कहता था ताकि उसके लिखने के समय तक पूरा किया गया चढ़ावा इस भावना में स्वीकार किया जाए।

इसके अलावा, रोमियों से पता चलता है कि कुरिन्थियों ने संग्रह में पूरा सहयोग किया। हम रोमियों के अध्याय 15, आयत 23 से 28 और अध्याय 16, आयत 1 में देखते हैं। प्रेरितों के काम 21, 17 से 20 में लूका के विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि इसे कृतज्ञता के साथ स्वीकार किया गया था। पौलुस 1 कुरिन्थियों 16 में निर्देश देता है।

तो, हम देखते हैं कि यह सब चल रहा है। मेरा मतलब है, हमें यह सब परिचय देने की ज़रूरत है क्योंकि हम इन दो अध्यायों को देख रहे हैं। हम यहाँ पौलुस को जो प्रयोग करते हुए देखते हैं, उसे हम बयानबाज़ी कहेंगे, जो जानबूझकर बयानबाज़ी है, जो संग्रह की ओर निर्देशित है, लेकिन यह कुरिन्थियों के साथ उसकी विश्वसनीयता के हित में भी काम करती है।

पौलुस की अपनी मासूमियत और ईमानदारी और कुरिन्थियों का उस पर भरोसा और विश्वास। देखिए, कुरिन्थियों द्वारा संग्रह का पूरा होना इन दोनों बातों को प्रदर्शित करेगा। कुरिन्थियों का पौलुस पर भरोसा और विश्वास।

यह बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है। अब, हम इसे ध्यान में रखते हैं। आइए इसे कहें।

आप देखिए, पॉल के समय के सामाजिक और आर्थिक रिश्तों में, जिसे हम संरक्षण और ग्राहक कहते हैं, वह था। आपके पास संरक्षक और ग्राहक होते हैं। यह अक्सर उन लोगों के बीच होता है जो वित्तीय ज़रूरतों के कारण समान सामाजिक स्थिति के नहीं होते हैं।

उस समय कोई ऋण देने वाली संस्थाएँ नहीं थीं, कोई बैंक नहीं था, कोई सहकारी समितियाँ नहीं थीं, कोई वित्तीय एजेंसियाँ नहीं थीं, और जो सामाजिक सुरक्षा जाल थे, वे भी मौजूद नहीं थे। इसलिए, उस समय व्यक्तिगत संरक्षण एक व्यावहारिक आवश्यकता थी। इसलिए, संरक्षण संबंधों के साथ आने वाले सभी आर्थिक लाभों के साथ-साथ सामाजिक परिणाम भी थे।

संरक्षक-ग्राहक संबंध में सम्मान और शर्म के मुद्दे शामिल थे। इसलिए, उपहार या उपकार देने और स्वीकार करने से प्राप्तकर्ता को एक निम्न भूमिका में रखा जाता था और अपने संरक्षकों के प्रति कृतज्ञता और सम्मान के साथ जवाब देने के लिए बाध्य किया जाता था। ऐसे रिश्तों को दोस्ती

कहा जाता था जैसे कि बराबरी के बीच, लेकिन यह लेबल वास्तव में संरक्षक-ग्राहक संबंध के लिए एक विनम्र आवरण मात्र था।

ऐसा लगता है कि पॉल ने यह निष्कर्ष निकाला था कि वह फिलिप्पियों की तरह कोरिंथियों से वित्तीय सहायता नहीं ले सकता था। ऐसा करने से वह धनी कोरिंथियन संरक्षकों के प्रभुत्व के तहत सामाजिक रूप से निम्न शक्ति संबंध में आ जाता। आप देखिए, कोरिंथियों के साथ पॉल की समस्या का एक हिस्सा यही था।

वह उनसे पैसे नहीं लेने वाला था, और क्योंकि उसे उनसे सहायता नहीं मिलने वाली थी, इसलिए उन्होंने सोचा कि वह उनसे प्यार नहीं करता। जबकि पौलुस खुद को इन कुरिन्थियों के अधीन उनके मुवक्किल के रूप में रखने के लिए तैयार नहीं था। मेरा मतलब है, इस अध्याय में और निश्चित रूप से, अगले अध्याय 8 और 9 में भी देखने के लिए बहुत कुछ है। सुलह और व्यक्तिगत गर्मजोशी के आधार पर, जिसे हमने अब अध्याय 7, श्लोक 14 से 16 में देखा है, पौलुस कुरिन्थियों को यरूशलेम कलीसिया के लिए भेंट के अपने हिस्से को पूरा करने के लिए प्रेरित करना चाहता है।

वह ईसाईयों के अनुग्रह को भी उनकी स्थिति पर लागू करता है। वह अपनी दलील को तीन चरणों में विभाजित करता है। पहला, वह धीरे से अध्याय 8, श्लोक 1 से 15 में प्रसाद को पूरा करने के लिए कहता है।

फिर, दूसरे नंबर पर, वह अध्याय 8, पद 16 से अध्याय 9, पद 5 तक यरूशलेम में पहुँचाई जाने वाली भेंट के लिए पर्याप्त प्रावधान करता है। फिर, अंत में, वह अध्याय 9, पद 6 से 15 में देने में ऐसी उदारता के आशीर्वाद पर जोर देता है। तो, आप पौलुस की बयानबाजी की रणनीति को देखते हैं। वह अनुग्रह के लिए शब्द, करिस का उपयोग करता है।

चरिस शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में करता है, जिसे हम आगे बढ़ने पर देखेंगे। जब हम अध्याय 8 और 9 को देखेंगे, तो हम इसे इसलिए देखेंगे क्योंकि वह इसे अध्याय 8, पद 1, पद 4, पद 6, पद 7, पद 9, पद 16, पद 19, फिर अध्याय 9, पद 8, पद 12, पद 14, पद 15 में प्रयोग करता है।

तो, ये दोनों आयतें अनुग्रह से भरी हुई हैं। आप यहाँ पौलुस की बयानबाजी की रणनीति देख सकते हैं। जैसा कि हमने पहले कहा, वह अनुग्रह का उपयोग एक इंकलूसियो बनाने के लिए करता है, इसे साहित्यिक पुस्तक के अंत की तरह रखता है।

इस अनुच्छेद में समावेश का यही अर्थ है। और, महत्वपूर्ण बात यह है कि पॉल के सभी पत्रों में शुरुआत और अंत में किसी न किसी रूप में चरिस शामिल है। पॉल के सभी पत्र।

यह अनुग्रह से शुरू होता है और अनुग्रह के साथ ही समाप्त होता है। इसलिए, अध्याय 8 में, आइए अब वहाँ जाएँ, वह भेंट को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करता है। पद 1 से शुरू करते हुए। हम चाहते हैं कि आप, भाइयों और बहनों, मकिदुनिया की कलीसियाओं को दिए गए परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में जानें।

क्योंकि विपत्ति की एक गंभीर परीक्षा के दौरान, उनकी भरपूर खुशी और उनकी अत्यधिक गरीबी उनकी ओर से उदारता के धन में बह गई है। इस बारे में सोचें। इस अध्याय की शुरुआत में हम तीन महत्वपूर्ण बातों पर गौर करेंगे।

पौलुस पद 7 तक पहुँचने तक कोई सीधी अपील नहीं करता। इसलिए, वह बस गया और बात करना शुरू कर दिया। वह उनसे अपील करता है; वह पद 7 तक अपील नहीं करता। वह यह कहकर शुरू करता है, हम चाहते हैं कि आप जानें, भाइयों और बहनों, परमेश्वर की कृपा के बारे में जो मकिदुनिया की कलीसियाओं को दी गई है। इसलिए, अपील पद 7 तक नहीं आती। दूसरा, वह स्नेह के शब्द का उपयोग करता है।

वह उन्हें भाई-बहन, अगापेटोई, प्यारे लोग कहकर शुरू करता है। इसी तरह उसने शुरुआत की। अब, वह निश्चित रूप से जानता था कि वह क्या कर रहा था।

उन्होंने मैसेडोनियावासियों की उदारता से शुरुआत की। वे बहुत ही सावधानी से, सावधानी से, पैसे के नए और संवेदनशील विषय पर आगे बढ़ते हैं। और हम सभी जानते हैं कि आज भी, मंत्रालय में पैसे का विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है।

अगर कोई मंत्री वित्त के मामले में ईमानदारी दिखा सकता है, तो हमें ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा करनी चाहिए क्योंकि यही वह जगह है जहाँ कई मंत्री ठोकर खाकर गिरे हैं। और इसलिए, पॉल बहुत सावधान था। पैसे में ईमानदारी, वित्त में ईमानदारी और वित्तीय प्रबंधन में ईमानदारी बहुत महत्वपूर्ण हैं और मंत्रालय की सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं।

फिर से, पॉल ने अध्याय 7 में, अध्याय 6 में पहले ही कहा है कि हमें किसी को नाराज़ नहीं करना चाहिए। हमें किसी के सामने कोई बाधा नहीं डालनी चाहिए। हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि जब वित्त की बात आती है, तो हम इसे सही तरीके से करें।

इसलिए, उसने पैसे माँगने से शुरुआत नहीं की। वह नाजुक ढंग से आगे बढ़ता है। वह अनुग्रह के विषय की पहचान करता है।

तो, पहली बात जो हमें ध्यान में रखनी चाहिए वह यह है कि वह पद 7 तक कोई सीधी अपील नहीं करता। वह उनसे अपील करता है। वह स्नेह के शब्द का उपयोग करता है। दूसरी बात अनुग्रह शब्द का पहला उपयोग है क्योंकि यह देने से संबंधित है।

मैसेडोनियावासियों की भेंट परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्ध पर आधारित है। इस प्रकार, पौलुस इसे परमेश्वर का अनुग्रह कहता है। और तीसरी बात यह है कि वह मैसेडोनियावासियों का उदाहरण देता है, जिन्होंने, यद्यपि वे सताए गए थे और अत्यंत गरीब थे, फिर भी उदारता से दान दिया।

यह वास्तव में प्रेम और अनुग्रह का प्रमाण है, जो दोनों ही देने के लिए पर्याप्त प्रेरणा का निर्माण करते हैं। प्रेम और अनुग्रह देने के लिए प्रेरणा होनी चाहिए। इसलिए, हम पद 1 से अंश को देखना शुरू करते हैं। वह अपने विषय को ईश्वर के अनुग्रह के रूप में पहचानता है।

हम चाहते हैं कि आप परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में जानें, भाइयों और बहनों। अर्थात्, वह अनुग्रह जो दिया गया है या वह अनुग्रह जो परमेश्वर की ओर से मकिदुनिया की कलीसियाओं को मिलता है। यहाँ यह बहुत दिलचस्प है कि पौलुस ने एक शब्द का प्रयोग पूर्ण काल में किया है।

और आप जानते हैं, जब हम पूर्ण काल के बारे में बात करते हैं, तो हम किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात कर रहे होते हैं जो की गई है लेकिन जिसका प्रभाव जारी है। यह अतीत में किया गया है, लेकिन इसका प्रभाव जारी है। और फिर वह कहते हैं, आप जानते हैं कि ईश्वर की कृपा दी गई है।

वहाँ यूनानी शब्द पूर्ण काल में है। अर्थात्, यह दर्शाता है कि अनुग्रह अभी भी उनके जीवन में कार्यरत था। यह सिर्फ़ एक बार का अनुग्रह नहीं था।

यह अनुग्रह है जो निरंतर बना रहता है। और जैसा कि हम कभी-कभी कहते हैं, कुंजी, उपहार जो देता रहता है। ठीक यही मैसेडोनियावासियों के जीवन में हो रहा है।

यह अनुग्रह है जो देता रहता है। यह अनुग्रह है जो निरंतर है। इसलिए, ऐसा नहीं है कि जब उन्होंने दिया तो उनके पास अनुग्रह था, लेकिन अनुग्रह चला गया।

नहीं, यह एक ऐसा चर्च था जो अनुग्रह से भरा हुआ था और अनुग्रह से भरा हुआ था। हम जानते हैं कि पौलुस ने उत्तरी ग्रीक के मकिदुनिया प्रांत में, फिलिप्पी में, थिस्सलुनीके में, बिरिया में चर्चों की स्थापना की।

और अब पौलुस ने उदाहरण की अपील की। वह भाइयों और बहनों के पास जाता है। अडेलफोर्ड ।

यहाँ, बल्कि... एडेलफोर्ड ... भाई और बहन एक साथ।

अब, आम तौर पर, लोग इसका अनुवाद भाइयों के रूप में करते हैं, लेकिन ये भाई और बहन हैं। कुरिन्थ के भाई और बहन अपने अनुभव में परमेश्वर के अनुग्रह को जान सकते हैं जिसने मैसेडोनिया की कलीसियाओं को संग्रह के लिए उदारता और उत्साहपूर्वक देने के लिए प्रेरित और सक्षम किया। मसीह में उद्धार के परमेश्वर के मुफ्त उपहार के रूप में अनुग्रह पौलुस के धर्मशास्त्र के मूल में है।

पॉल का धर्मशास्त्र अनुग्रह का धर्मशास्त्र है। ध्यान रखें, जैसा कि हमने पहले कहा, यह एक जिम्मेदार अनुग्रह है। सब कुछ उसी से, परमेश्वर के अनुग्रह से प्रवाहित होता है।

पॉल का धर्मशास्त्र, सबसे बढ़कर, अनुग्रह का धर्मशास्त्र है, एक ऐसा धर्मशास्त्र जो उनके लेखन के सबसे व्यावहारिक पहलुओं को भी सूचित करता है। पत्र के आरंभ में उनके अभिवादन में परमेश्वर, हमारे पिता, और प्रभु यीशु मसीह की ओर से आप सभी के लिए अनुग्रह शामिल है। उनकी विदाई प्रार्थना थी, प्रभु यीशु मसीह की कृपा आप सभी के साथ रहे।

इसलिए, पद 1 में अनुग्रह की घोषणा करने के बाद, पौलुस अब पद 2 से 4 में समझाता है कि कैसे वह अनुग्रह मकिदुनियावासियों के जीवन में प्रकट हुआ। अनुग्रह जो स्पष्ट था। C उनकी स्थिति का वर्णन है।

कष्ट की एक गंभीर परीक्षा के बीच में। कष्ट की एक गंभीर परीक्षा। इसका क्या मतलब है? एक गंभीर परीक्षा जो कष्ट के कारण होती है।

और फिर, गहरी गरीबी के बारे में बात करते हैं। गहरी गरीबी, जैसा कि हम न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल में पाते हैं। गहरी गरीबी।

मैसेडोनिया के लोगों में, उत्पीड़न ने खुशी पैदा की। हम इसे अध्याय 7, श्लोक 4 में देखते हैं। और यह दिलचस्प है। उत्पीड़न ने खुशी पैदा की, और गरीबी ने उदारता पैदा की।

ऐसा कैसे? यह दूसरी शक्ति है। भगवान की कृपा यही करती है। आप जानते हैं, जब उत्पीड़न होता है, तो वह खुशी मनाने का समय नहीं होता, लेकिन मैसेडोनिया के लोगों के लिए यही हुआ।

और फिर, गरीबी ने उदारता को जन्म दिया और उसे जन्म दिया क्योंकि ईश्वर की कृपा काम कर रही थी। आप देखिए, उनकी गरीबी की सीमा संभवतः विभिन्न कारकों के कारण थी। शायद इनमें से एक यह है कि उन्हें सामाजिक रूप से बहिष्कृत किया गया था।

उन्हें अपने ईसाई धर्म के कारण बहुत उत्पीड़न का सामना करना पड़ा था, साथ ही मैसेडोनिया की सामान्य आर्थिक स्थिति भी। इसलिए, दो तरह से, उनके लिए यह बहुत बुरा था। अपने ईसाई धर्म के संदर्भ में, उन्हें अलग-थलग कर दिया गया, बहिष्कृत कर दिया गया और परेशान किया गया।

मैसेडोनिया के सामान्य आर्थिक दृष्टिकोण के संदर्भ में, यह बहुत बुरा था। मेरा मतलब है, मार्गरेट थ्रॉल ने न्यू टेस्टामेंट पर अपनी अंतर्राष्ट्रीय टिप्पणियों में यही सुझाव दिया है। आप इसे पृष्ठ 522 से 523 पर देख सकते हैं।

और यह कहता है कि आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। लेकिन यह दिलचस्प है। यह उदारता के धन से भरी अत्यधिक गरीबी के बारे में बात करता है।

उदारता के धन में। यहाँ उदारता शब्द का अर्थ उदारता है। उदारता का अर्थ उदारता है।

यह कुछ ऐसा है जो उन्होंने बहुतायत में दिया। यहाँ जिस शब्द का इस्तेमाल किया गया है वह कुछ मतदान संदर्भों के लिए बहुत ही अनोखा है। इसका सामान्य अर्थ आमतौर पर सादगी, ईमानदारी या स्पष्टवादिता होता है।

लेकिन यहाँ उदारता शब्द का विस्तृत अर्थ है। वे बहुत उदार थे। प्रचुर आनंद और अत्यधिक गरीबी उदारता के धन में बह गई है।

आप यहाँ दो विरोधाभास देखते हैं: दुःख और खुशी, गरीबी और अमीरी। ये विरोधाभास एक मूल्यवान सबक प्रदान करते हैं जिसे हमें सीखने की आवश्यकता है।

यह क्या है? विश्वासी के आनंद का बाहरी परिस्थितियों से कोई संबंध नहीं है। मसीही दुख और उत्पीड़न के बीच भी आनंद का अनुभव कर सकते हैं। हमें इस अंश से यह सीखने की ज़रूरत है।

और हम इसे पूरे शास्त्रों में देखते हैं। मत्ती अध्याय 5 में यीशु ने कहा, धन्य हो तुम जब धार्मिकता के कारण सताए जाते हो। उसने कहा कि आनन्दित हो और बहुत प्रसन्न हो।

हम प्रेरितों, यानी आरंभिक शिष्यों का उदाहरण प्रेरितों के काम अध्याय 5, पद 41 में देखते हैं। वे मार खाने और इस तरह की अन्य बातों के बाद भी बाहर निकले। वे खुशी से बाहर निकले।

और, बेशक, याकूब अध्याय 1 आयत 2 में, पौलुस निर्वासितों और विदेश में बिखरे हुए लोगों को लिख रहा था। याद रखें, निर्वासित वे लोग हैं जो अपने घरों के आराम से विस्थापित हो गए हैं, जो गरीब हैं, जो पीड़ित हैं। और उसने उनसे खुशियाँ मनाने को कहा।

और 1 पतरस अध्याय 1, आयत 6 से 7 में भी यही बात कही गई है। हम यह सब इसलिए कह रहे हैं ताकि हम जान सकें कि यह केवल मैसेडोनियावासियों तक ही सीमित नहीं था। यह कुछ ऐसा है जो विश्वासियों के रूप में हमारे जीवन की विशेषता होनी चाहिए।

हमें परिस्थितियों के अधीन होने से इंकार करना चाहिए। यह मैसेडोनियावासियों के लिए सच है। इसलिए, पौलुस उनके सर्वोच्च बलिदान को कुरिन्थियों के लिए प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत करता है।

पौलुस पद 3 में कहता है, क्योंकि मैं गवाही देता हूँ कि मकिदुनियावासियों की उदारता चार तरीकों से प्रमाणित हुई। मैं गवाही देता हूँ, नंबर 1, कि उन्होंने स्वेच्छा से अपनी क्षमता के अनुसार, यहाँ तक कि अपनी क्षमता से भी अधिक दिया। नंबर 1, उन्होंने उतना ही दिया जितना वे दे सकते थे।

और अपनी क्षमता से भी परे। उन्होंने दिया। उन्होंने अपने सीमित संसाधनों से भी परे दिया।

आप जानते हैं, आजकल कभी-कभी चर्च के पादरी कहते हैं, आपको देने की ज़रूरत नहीं है। आपको देने की ज़रूरत नहीं है, अगर आपके पास नहीं है, तो आपको देने की ज़रूरत नहीं है। अब यीशु उस महिला से कह सकते थे जिसने विधवा का पैसा दिया था, या वे महिला से कह सकते थे, अपना पैसा रख लो, मत दो, तुम देने के लिए बहुत गरीब हो।

नहीं। सबक सीखो। कोई भी इतना गरीब नहीं है कि वह दे न सके।

यहाँ मैसेडोनियन लोग थे। उनके लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा बहुत ही कठोर थी। उन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार, यहाँ तक कि अपनी क्षमता से भी अधिक दिया।

तो, नंबर 1, उन्होंने जितना संभव था, उतना दिया, और अपनी क्षमता से भी ज़्यादा दिया। नंबर 2, उन्होंने पूरी तरह से अपने दम पर दिया। उन्हें बहलाया-फुसलाया नहीं गया था।

उनके साथ कोई छल-कपट नहीं किया गया। इसमें कोई चालबाज़ी नहीं थी। उन्हें कुछ खरीदने के लिए कुछ देने की ज़रूरत नहीं है।

नहीं, बिलकुल नहीं। आज, हम देखते हैं कि मंत्रालय में दान कैसे किया जाता है। मेरा मतलब है, ठीक है, आप इसे मुझे भेजें, और मैं इसे आपको वापस भेज दूँगा।

यह एक भेंट है। अगर आप इतने डॉलर या किसी भी मूल्यवर्ग की भेंट देते हैं, तो हम आपको यह किताब भेजेंगे। खैर, यह कोई भेंट देना नहीं है।

आप बस एक किताब खरीद रहे हैं। अगर आप देते हैं, तो बस देते हैं। और उन्होंने पूरी तरह से अपने आप दिया।

यह बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने विनती करने के बजाय पूरी तरह से दिया। पौलुस ने इस शब्द का प्रयोग केवल यहाँ और 8:17 में किया है जहाँ वह तीतुस का वर्णन करता है, यहाँ भी यही शब्द प्रयोग किया गया है।

पॉल की ओर से किसी भी तरह के दबाव के अलावा, मैसेडोनिया के लोगों ने स्वेच्छा से दान दिया। यह जानना हमेशा महत्वपूर्ण है कि हम स्वेच्छा से दान देते हैं। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब दो बातें हैं।

अपनी पहल पर, और दूसरी बात, अपनी स्वतंत्र इच्छा से। अपनी पहल पर और अपनी स्वतंत्र इच्छा से, उन्होंने दान दिया। मैसेडोनियावासियों की अत्यधिक गरीबी के बावजूद, उन्होंने उदारता से दान दिया।

उन्होंने न केवल अपनी क्षमता के अनुसार दिया, बल्कि उन्होंने अपना दिल भी दिया। पॉल के लिए जो बात मायने रखती थी वह यह नहीं थी कि उन्होंने कितना दिया या कितना दिया। बल्कि यह मायने रखता था कि उन्होंने किस भावना से दिया।

आप देखिए, परमेश्वर के लिए, बलिदान के रूप में दिए गए कुछ सेंट, अरबों डॉलर से कहीं ज़्यादा भारी हो सकते हैं। यह सच है। यही कारण था कि पौलुस ने उन्हें कुरिन्थियों के लिए अनुकरणीय उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया।

लेकिन वह यहीं नहीं रुका। देखिए उसने क्या किया। तीसरा, मकिदुनिया के लोगों ने पौलुस से इस विशेषाधिकार के लिए बहुत आग्रह किया था।

सुनिए, यहाँ फिर से इस्तेमाल किया गया शब्द है देखभाल, अनुग्रह। मैसेडोनिया के लोगों ने पौलुस से संतों की इस सेवा में हिस्सा लेने के विशेषाधिकार के लिए आग्रह किया था। आप देखिए, पौलुस के शब्द बहुत सावधानी से चुने गए हैं।

मार्क जो कहते हैं उसके विपरीत, वे सघन लेकिन महत्वपूर्ण हैं। शब्द तत्काल, या ईमानदारी से, ग्रीक शब्दों का अर्थ है, जिसका ग्रीक में अर्थ है मेटापोलिस पैराक्लेसिओस, बहुत प्रोत्साहन के साथ। उन्होंने बहुत प्रोत्साहन के साथ तत्काल दिया।

पॉल इसे क्यों दोहरा रहा है? बस उन्हें यह बताने के लिए कि अनुग्रह का क्या मतलब है। मेरा मतलब है, पॉल पहले पद में अनुग्रह का उपयोग करता है, फिर दूसरे वाक्य में, अब अनुग्रह के विशेषाधिकार के रूप में। और फिर वह कहता है, पॉल अनुग्रह को संतों की सेवा में साझा करने के रूप में परिभाषित करता है, यानी, राहत देने में, गरीब संतों की ज़रूरतों के लिए राहत प्रदान करने में।

बहुत, बहुत महत्वपूर्ण। उन्होंने कहा, हमसे ईमानदारी से विनती करते हुए। आप जानते हैं, जब आप इसे पढ़ते हैं, तो आप खुद से पूछते हैं, उन्होंने देने के लिए भीख माँगी।

कोई कैसे, कैसे, कैसे भीख मांग सकता है? क्या ऐसा नहीं है कि हम लोगों से भीख मांगते हैं, लेकिन ये लोग भीख मांग रहे हैं। जाहिर है, पॉल सहानुभूतिपूर्ण था, जाहिर है। पॉल सहानुभूतिपूर्ण था, और वह उनकी स्थिति जानता था, और वह उनसे ज्यादा उम्मीद नहीं कर रहा था।

या शायद पॉल कह रहा था, अब हम आपकी स्थिति को समझते हैं; आपको खुद कुछ मदद की ज़रूरत है, और इसलिए, आपको इसकी ज़रूरत नहीं है, लेकिन उन्होंने देने के लिए भीख माँगी। मेरा मतलब है, उसने कहा, उन्होंने देने के लिए भीख माँगी, और फिर वह पाँचवें पद में आगे बढ़ता है, और यह, न केवल जैसा कि हमने उम्मीद की थी, उन्होंने खुद को पहले प्रभु को दिया, और परमेश्वर की इच्छा से हमें दिया। तो, यह मैसेडोनियावासियों की उदारता का चौथा सबूत है।

उन्होंने पौलुस की अपेक्षा से कहीं ज़्यादा किया। उन्होंने जो दिया, उसकी मात्रा और अपने योगदान के तरीके, दोनों में ही पौलुस की अपेक्षाओं से बढ़कर किया। उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, पहले प्रभु को और फिर हमें अपना जीवन समर्पित किया।

बहुत महत्वपूर्ण, बहुत महत्वपूर्ण। पॉल महत्व, प्राथमिकता, महत्व में, परमेश्वर को देने, और फिर उन्हें देने, परमेश्वर के साधन द्वारा देने के बारे में बात करता है। तो, हम यहाँ पॉल को काफी बातें कहते हुए देखते हैं।

उन्होंने मेसीडोनियन लोगों की भावनात्मक स्थिति का वर्णन किया जब वे दान देते थे। वे देने के लिए बहुत प्रार्थना करते थे या बहुत विनती करते थे। वे देना एक विशेषाधिकार मानते थे।

देखिए, दूसरों ने अपनी परिस्थिति को बहाना बनाकर दिया होगा और कहा होगा, ठीक है, भाई पॉल, आप समझ गए। मेरा मतलब है, यहाँ तक कि खुद भगवान भी समझते हैं कि हमारे पास कुछ नहीं है। इसलिए हम नहीं देते। नहीं, उन्होंने अपनी परिस्थिति को बहाना नहीं बनाया।

वास्तव में, पौलुस ने शायद उन्हें खुशी-खुशी माफ़ कर दिया होता, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। वे अपनी मुश्किल परिस्थितियों और अपनी ज़रूरतों के बावजूद दूसरों को अनुग्रह प्रदान करने के अवसर से वंचित या वंचित नहीं होने वाले थे। भाग लेने के लिए मैसेडोनियावासियों की उत्सुकता पौलुस को उन्हें कुरिन्थियों के लिए एक आदर्श के रूप में उपयोग करने की अनुमति देती है।

यह ध्यान देने योग्य है कि पौलुस ने कुरिन्थियों के दान को परमेश्वर के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और उनके प्रेरित के रूप में उनके प्रति उनकी वफ़ादारी के संदर्भ में रखा है। प्रभु की सेवा करने की मैसेडोनियावासियों की इच्छा इतनी तीव्र थी कि वे अपनी आर्थिक उपलब्धियों को उन सेवकाई अवसरों में शामिल होने से नहीं रोक पाए जो उनके लिए खुले थे। आप जानते हैं क्या? कुरिन्थियों ने निष्कर्ष निकाला है।

कुरिन्थियों को देने के लिए कहे बिना, पौलुस ने आधार तैयार किया और कहा, मैसेडोनियावासियों को देखो। परमेश्वर का अनुग्रह उनके जीवन में प्रकट होता है। अब, याद करो, उसने 2 कुरिन्थियों 6 में उनसे कहा था, जिसे हमने पहले देखा था, कि परमेश्वर का अनुग्रह व्यर्थ न जाने दो, जिसे हमने पौलुस और कुरिन्थियों के बीच मेलमिलाप के बारे में कहा था।

यह उनके लिए अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह को प्रदर्शित करने का एक और अवसर है, और पौलुस ने मकिदुनिया के लोगों के मामले का उपयोग करते हुए कहा, देखो, यहाँ मकिदुनिया के लोग हैं। वे गरीब थे। वे एक भयानक स्थिति में थे।

उनकी अर्थव्यवस्था खराब है, लेकिन क्योंकि उनके जीवन में ईश्वर की कृपा है, इसलिए वे देते हैं। लेकिन उन्होंने न केवल दिया, बल्कि उदारता से दिया, और उन्होंने उदारता से दिया। उन्होंने न केवल ऐसा किया, बल्कि हमारी अपेक्षा से भी अधिक दिया।

लेकिन सुनिए, सिर्फ़ इतना ही नहीं कि उन्होंने हमारी अपेक्षा से ज़्यादा दिया, बल्कि उन्होंने सबसे पहले खुद को परमेश्वर को दिया और फिर खुद को हमें दिया। पॉल निष्कर्ष निकालने के लिए कह रहा है। अगर वे ऐसा कर सकते थे, तो आप भी कर सकते हैं।

यह उन्हें शर्मिंदा नहीं कर रहा है, बल्कि उन्हें प्रोत्साहित कर रहा है। इसलिए, श्लोक 8 में, यह शुरू होता है। हम इसे श्लोक 6 तक देखते हैं। श्लोक 7, श्लोक 1 से 6, वास्तव में, वैसे, ग्रीक में एक वाक्य है।

तो, हम देखते हैं कि। श्लोक 1 से 6 सिर्फ़ एक वाक्य है। इसलिए, श्लोक 7 एक संक्रमण है।

श्लोक 7 एक संक्रमण है। इसमें कहा गया है कि यह उनसे बात करता है कि अब कैसे देना है। तो, चलिए श्लोक 8 पर चलते हैं। मैं इसे एक आदेश के रूप में नहीं कहता।

मैं यह आदेश के तौर पर नहीं कह रहा हूँ। बिल्कुल नहीं। बल्कि, यह उन्हें पसंद आने वाला था।

मैसेडोनिया के लोगों के उदाहरण को देखने के बाद, अब पौलुस ने कुरिन्थियों को भी देने में आगे बढ़ने या बल्कि श्रेष्ठ होने के लिए प्रेरित किया। परियोजना में कुरिन्थियों का आरंभिक उत्साह स्पष्ट रूप से कम हो गया। वे शुरू में उत्साही थे।

कुरिन्थियों को पूर्णता की कमी के लिए डाँटने के बजाय, पौलुस उनके आरंभिक उत्साह के लिए उनकी प्रशंसा करता है। इसलिए, पौलुस अब उनकी इच्छा को अपील करता है। यही बात पद 7 में कही गई है। अब, जैसा कि तुम सब बातों में, विश्वास में, भाषण में, ज्ञान में, अत्यंत उत्सुकता में, और हमारे प्रेम में श्रेष्ठ हो।

इसलिए, हम भी चाहते हैं कि आप इन सामान्य उपक्रमों में उत्कृष्टता प्राप्त करें। यह पॉल है, वास्तव में एक पादरी। वह उनसे बात करने जा रहा था।

उन्होंने कहा, देखो, कुरिन्थियों, तुम विश्वास में श्रेष्ठ हो, तुम भाषण में श्रेष्ठ हो, तुम ज्ञान में श्रेष्ठ हो। वास्तव में, मैं जानता हूँ कि तुम उत्सुक हो। और निश्चित रूप से, तुम्हारे लिए हमारे प्रेम में।

इसलिए, हम भी चाहते हैं कि आप इन सामान्य उपक्रमों में उत्कृष्टता प्राप्त करें। इसलिए, पौलुस अब उन्हें उदारता के लिए चुनौती देता है। और वह उनसे बात करना शुरू करता है, श्लोक 8। मैं इसे एक आदेश के रूप में नहीं कहता, लेकिन मैं दूसरों की ईमानदारी के खिलाफ आपके प्यार की सच्चाई का परीक्षण कर रहा हूँ।

क्योंकि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के उदार कार्य को जानते हो, कि वह धनी होते हुए भी तुम्हारे लिए निर्धन बन गया ताकि उसकी निर्धनता से तुम धनी बन जाओ। आप देखिए, यरूशलेम में कलीसिया के लिए भेंट पूरी करने के लिए कुरिन्थियों को पौलुस की चुनौती अब पद 8 से 15 में जारी है। प्रेरित जिस तरह से वह सीधे और आंतरिक रूप से देने के उनके अनुग्रह को प्रेरित करना चाहता है, उसे सुसमाचार के साथ जोड़ता है जिसका वह प्रचार करता है।

इस प्रकार, वह हमें सभी मसीही दान के मानक प्रस्तुत करता है। पौलुस दान के और भी अधिक प्रेरक उदाहरण की अपील के साथ ऐसा करता है। वह हाथ में मौजूद ठोस कार्य के निहितार्थों को स्पष्ट करता है।

यह ऐसा है जैसे पॉल कह रहा हो, अरे, एक मिनट रुको। अगर मैसेडोनियन आपके लिए पर्याप्त उदाहरण नहीं हैं, तो मैं आपको एक और उदाहरण दिखाता हूँ। अगर आप कहते हैं, ठीक है, मैसेडोनियन, तो इसका कारण यह है कि वे कौन हैं।

मैं आपको एक उदाहरण दिखाता हूँ। तो, पद 8 में, उन्होंने कहा, मैं आपको आदेश के रूप में नहीं लिख रहा हूँ; बल्कि, मैं दूसरों के प्रति आपकी ईमानदारी की अपील कर रहा हूँ, विशेष रूप से मैसेडोनियावासियों के प्रति। वह अब यहाँ बात करते हैं। वह कहते हैं, मैं आदेश के रूप में नहीं लिख रहा हूँ, लेकिन मैं आपसे बस इस बारे में बात करना चाहता हूँ कि आपको क्या करने की ज़रूरत है।

पौलुस का इरादा मैसेडोनियावासियों की ईमानदारी का उदाहरण देकर कुरिन्थियों के प्रेम की ईमानदारी को सक्रिय करना है ताकि वे संग्रह के कार्य को आगे बढ़ा सकें। पद 8 में, पौलुस जल्दी से कहता है कि वह अपने प्रेरितिक अधिकार के आधार पर कुरिन्थियों को कोई आदेश नहीं दे रहा था। संग्रह प्रेम का कार्य, अनुग्रह की सेवकाई होना था।

इसलिए, पौलुस को यह पसंद है कि कुरिन्थियों का प्रेम मकिदुनियावासियों से कम न हो। और मकिदुनियावासियों का उदाहरण उसके और अपने साथी मसीहियों के प्रति उनके प्रेम की वास्तविकता को परखने का आधार बने। हालाँकि, पौलुस एक बेहतर मानदंड प्रदान करता है।

तो, वह क्या करता है? वह यीशु की कहानी बताता है, जो अमीर होते हुए भी गरीब बन गया ताकि वे, गरीब होते हुए भी अमीर बन सकें। आप देखिए, पौलुस का मसीह का निर्णय स्वैच्छिक था, इसमें कोई संदेह नहीं है। यहाँ मसीह के अवतार को ध्यान में रखा गया है।

अपने अवतार में, मसीह ने अपनी संपत्ति समर्पित कर दी ताकि मानवता उसके उद्धार के आध्यात्मिक धन में हिस्सा ले सके। स्थानीय चर्च या समूह या संप्रदाय के साथ प्रतिस्पर्धा के बजाय, मसीह का बलिदान देने का मकसद होना चाहिए। इसलिए, श्लोक 9 में, वह कहता है, तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह को जानते हो।

वह फिर से मुख्य शब्द का उपयोग करता है, चैरिस। और यहाँ, यह अपने महत्व के शिखर पर पहुँच जाता है। आप जानते हैं पॉल क्या करता है? पॉल सर्वोच्च कारण पर जोर देता है।

इसलिए यह 4 से शुरू होता है। कुरिन्थियों को देने के अनुग्रह में श्रेष्ठ क्यों होना चाहिए इसका सर्वोच्च कारण मसीह का उदाहरण है। इस उदाहरण में, परमेश्वर का अनुग्रह हमारे प्रभु यीशु मसीह में प्रदर्शित परमेश्वर का उदार अनुग्रह है। पॉल को विश्वास है कि मसीह का उदाहरण कुरिन्थियों को संग्रह में भाग लेने के लिए प्रेरित और सक्षम करेगा।

अब, आप इसका विरोध नहीं कर सकते। यदि आप मैसेडोनियन लोगों का उदाहरण लेते हैं तो यह काम नहीं करता। और अब वह कहता है, ठीक है, यदि आप मैसेडोनियन लोगों के उदाहरण को नहीं सुनते हैं, यदि यह आपके लिए इतना मायने नहीं रखता है, तो मुझे मसीह के बारे में आपसे बात करने दें।

अब, आप इसमें क्या गलती कर सकते हैं? आप इसका विरोध कैसे कर सकते हैं? क्योंकि आपने खुद उस अनुग्रह का अनुभव किया है। उसने कहा, तुम मसीह यीशु में परमेश्वर के अनुग्रह को जानते हो। पौलुस को पूरा भरोसा है कि उसका उदाहरण कुरिन्थियों को चंदे में भाग लेने के लिए प्रेरित और सक्षम करेगा।

बहुत महत्वपूर्ण बात है। उसने कहा कि वह अमीर था, और वह गरीब हो गया। लेकिन मुख्य बात यह है कि कुरिन्थियों को पता है कि यह सब उनके लिए था।

दिलचस्प बात यह है कि पौलुस इसे आपके लिए रखता है, और वह उस खंड में एक बिंदु पर जोर देता है, जिसे वह शुरुआत में रखता है। आपके खातिर, वह गरीब बन गया।

ऐसा नहीं है कि वह तुम्हारे लिए गरीब बना, बल्कि तुम्हारे लिए। इसलिए, पौलुस ने जो कहा उस पर जोर देने के लिए ऐसा कहा। खैर, तुम्हारे लिए, वह अमीर होते हुए भी गरीब बना, ताकि तुम, उस व्यक्ति की गरीबी से, अमीर बन जाओ।

इसी तरह से वह शाब्दिक रूप से अनुवाद करता है, आपके लिए। इसलिए, वह यह कहकर शुरू करता है, आपके लिए। जब वह कहता है कि आप अमीर बन सकते हैं, तो वह कुरिन्थियों की आध्यात्मिक समृद्धि का उल्लेख कर रहा है।

मेरा मतलब है, पॉल ने इस पर एक तरह का हथौड़ा चलाया और कहा, कोरिंथियन, आपको इस बारे में कुछ करने की ज़रूरत है। आपके पास कोई बहाना नहीं है। आपकी खातिर, वह गरीब हो गया।

वह सब कुछ का स्वामी था। यह मसीह के संपूर्ण अवतार के बारे में बात करता है। आप हमारे प्रभु को धन की ऊंचाई से गरीबी की गहराई तक उतरते हुए देखते हैं।

याद रखें, उन्होंने कहा, लोमड़ियों के पास बिल होते हैं, पक्षियों के पास घोंसले होते हैं, लेकिन मनुष्य के पुत्र के पास सिर रखने के लिए कोई जगह नहीं है। खुद सृष्टिकर्ता के बारे में सोचें। क्योंकि शुरुआत में दुनिया थी, दुनिया परमेश्वर के साथ थी, और दुनिया परमेश्वर थी।

सभी चीज़ें उसके द्वारा बनाई गई थीं, और ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जो उसके बिना बनाई गई हो। उसने सब कुछ बनाया। वह सृष्टिकर्ता है, और फिर भी उसने महिमा को छोड़ दिया, ऊपर की दौलत को छोड़ दिया, और कुरिन्थियों की खातिर गरीब बन गया, और फिर पौलुस उनसे कह रहा है, हे कुरिन्थियों, तुम जानते हो कि उसने जो कुछ किया वह तुम्हारे लिए ही था।

वह मनुष्य बन गया। उसने शरीर धारण किया, और बेशक, वह गरीब हो गया। उसने सिर्फ़ तुम्हारे लिए अपनी महिमा को ऊपर छोड़ दिया, और अगर उसने ऐसा किया, तो अब तुम्हारे पास पीछे हटने का कोई कारण नहीं है।

अपने अवतार में, मसीह ने अपनी संपत्ति समर्पित कर दी ताकि मानवता उसके उद्धार के आध्यात्मिक धन में हिस्सा ले सके। प्रतिस्पर्धा के बजाय मसीह का बलिदान, हमें केवल याचना करने के बजाय देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हम देते हैं क्योंकि हम एक उदार दाता, ईश्वर की सेवा करते हैं, जो उदारता से देता है।

क्या जेम्स ने उसका वर्णन इसी तरह नहीं किया है? उसने कहा कि हर अच्छा और उत्तम उपहार परमेश्वर, ज्योतियों के पिता से आता है, जो उदारता से देता है। उदारता से। और क्या हमें यह कहना चाहिए: यदि हम परमेश्वर के बच्चे हैं, तो हमें अपने पिता की तरह दिखना चाहिए।

हमें भी उदारता से देने की ज़रूरत है। पॉल यही कह रहा है। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि पॉल ने कुरिन्थियों से जो कहा वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

फिर, आइए श्लोक 10 से 12 पर जाएं। स्वेच्छा से और क्षमता के अनुसार। 8 और 9 में जो हमने पाया वह सर्वोच्च उदाहरण है।

अब, आयत 10 से 12 में, हम देखते हैं कि मसीह ने स्वेच्छा से दिया और कुरिन्थियों से आग्रह कर रहा है कि वे स्वेच्छा से और अपनी क्षमता के अनुसार दें। आयत 10, और इस तरह से मैं अपनी सलाह दे रहा हूँ। यह आपके लिए उचित है, जिन्होंने पिछले साल से ही कुछ करना शुरू कर दिया है, न केवल कुछ करने के लिए बल्कि कुछ करने की इच्छा रखने के लिए भी।

इसलिए, आज्ञा देने के बजाय, पौलुस फिर से सलाह देता है। उसने कहा, इस तरह, मैं अपनी सलाह दे रहा हूँ। यह आपके लिए उचित है, जिन्होंने पिछले साल से ही कुछ करना शुरू कर दिया है, न केवल कुछ करने के लिए बल्कि कुछ करने की इच्छा भी।

पद 11, अब इसे पूरा करो, ताकि तुम्हारी उत्सुकता तुम्हारे साधनों के अनुसार इसे पूरा करने के द्वारा मेल खाए। यदि उत्सुकता है, तो उपहार उसके अनुसार स्वीकार्य है जो उसके पास है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है। हम उन पदों से क्या सीखते हैं? उन्होंने पिछले वर्ष संग्रह में भाग लेना शुरू किया, शायद पॉल द्वारा 2 कुरिन्थियों को लिखने से एक साल पहले।

यह परियोजना के लिए उनके शुरुआती उत्साह का वर्णन करता है। वे देने वाले चर्चों में सबसे पहले थे, लेकिन संग्रह में भाग लेने की अपनी इच्छा व्यक्त करने वाले भी वे पहले थे। इच्छा का वर्तमान काल कोरिन्थियों की लंबे समय से चली आ रही इच्छा को दर्शाता है।

वे भाग लेना चाहते थे, लेकिन जाहिर है, उन्होंने इस परियोजना को छोड़ दिया था, शायद उनके और प्रेरित के बीच खराब संबंधों के परिणामस्वरूप। उन्होंने इसे छोड़ दिया, और पॉल अब कह रहा है, ठीक है, मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ कि आपने पहले क्या किया है, लेकिन आपको अब काम पूरा करना चाहिए। उन्हें अपने काम को उसके उचित निष्कर्ष पर लाना था।

इसका उद्देश्य यह है कि संग्रह का पूरा होना कुरिन्थियों के मूल उत्साह को प्रदर्शित कर सके, और इस तरह, मकिदुनियावासियों के सामने पौलुस के इस बात का घमंड करने से उनकी भागीदारी को प्रेरित करने में मदद मिली थी — आयत 12. यदि उत्सुकता है, तो उपहार उसके अनुसार स्वीकार्य है जो उसके पास है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है।

इसलिए, पौलुस ने अब तक जो कुछ कहा है, उसे सीधे कुरिन्थियों पर लागू करने की ओर कदम बढ़ाया है। वह उन्हें प्रोत्साहित करता है कि वे उस प्रयास को पूरा करें जो उन्होंने एक साल पहले शुरू किया था। एक बार फिर, पौलुस कोई आदेश नहीं देता।

वह उनसे तर्क करता है कि यद्यपि उनका मूल इरादा अच्छा था, लेकिन उन्हें इसे पूरा करने की आवश्यकता थी, अन्यथा उनके अच्छे इरादे बेकार हैं। हमेशा कहा जाता है कि नरक का रास्ता अच्छे इरादों से बना होता है। किसी चीज़ का इरादा करना और उसे करना एक ही बात नहीं है।

मैं प्रार्थना करने का इरादा रखता हूँ। प्रार्थना करने का इरादा नहीं है। प्रार्थना करो।

मैं बाइबल पढ़ने का इरादा रखता हूँ। बाइबल पढ़ने का इरादा नहीं है। वास्तव में बाइबल पढ़ें।

इरादे आम तौर पर जीत नहीं दिलाते। आपको इसे अमल में लाना होगा। ओह, मेरा इरादा उपवास करने का है।

फिर, उपवास शुरू करो। मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ। फिर, प्रार्थना शुरू करो।

मेरा इरादा सुसमाचार प्रचार करना है। फिर, सुसमाचार प्रचार करना शुरू करो। मेरा इरादा देने का है।

फिर देना शुरू करें। इरादा ही काफी नहीं है। अगर आपके इरादे अच्छे हैं, लेकिन आप उन्हें अमल में नहीं लाते, तो वे कुछ नहीं करेंगे।

जब हमारे पास चर्च में कोई प्रोजेक्ट होता है, तो आप इसे पादरी के रूप में जानते हैं। जब हमारे पास चर्च में कोई प्रोजेक्ट होता है, तो हम कहते हैं, पादरी, मैं देने का इरादा रखता हूँ। खैर, आप बैंक में इरादे नहीं लाते हैं।

आप बैंक में चेक लेकर जाते हैं। और पॉल कहते हैं कि आपको सिर्फ इरादे की नहीं, बल्कि कुरिन्थियों की ज़रूरत है। मुझे आपके इरादों से ज़्यादा की ज़रूरत है।

मुझे चाहिए कि आप भेंट चढ़ाएँ और उन्हें निष्कर्ष पर लाएँ। इसलिए, अब आयत 13 से 15 में, पौलुस समानता पर आधारित अपील के बारे में बात करता है। उसने कहा, मेरा मतलब यह नहीं है कि दूसरों के लिए राहत होनी चाहिए और आप पर दबाव होना चाहिए, लेकिन यह आपकी वर्तमान बहुतायत और उनकी ज़रूरत के बीच एक उचित संतुलन का सवाल है ताकि उनकी बहुतायत आपकी ज़रूरत के लिए हो ताकि एक उचित संतुलन हो सके।

जैसा कि लिखा है, जिसके पास बहुत कुछ था, उसके पास बहुत कुछ नहीं था, और जिसके पास थोड़ा था, उसके पास बहुत कम नहीं था। पौलुस का इरादा दूसरों को दरिद्र बनाकर कुछ लोगों की ज़रूरतों को कम करना नहीं था। परमेश्वर के लोगों के बीच, देना समानता के सिद्धांत के अनुसार होना चाहिए, जहाँ जो लोग संपन्नता का आनंद लेते हैं वे ज़रूरतमंदों के साथ साझा करते हैं।

यह सिद्धांत परमेश्वर के लोगों के बीच जीवन की आवश्यकताओं के वितरण को समान बनाने के लिए एक दिशानिर्देश के रूप में कार्य करता है ताकि सभी को पर्याप्त प्रावधान मिल सके। आप देखिए, पौलुस ने जंगल में मन्ना के दैनिक राशन के द्वारा इसका उदाहरण दिया है। यदि आप निर्गमन अध्याय 16, श्लोक 14 से 22 को पढ़ते हैं, तो आप देखते हैं कि जहाँ हर कोई अपनी ज़रूरत के अनुसार इकट्ठा होता था।

इसलिए, पौलुस ने इसे मन्ना के दैनिक राशन के द्वारा दर्शाया है, जिसे इस्राएलियों ने जंगल में अपनी यात्रा के दौरान प्राप्त किया था। आप देखिए, इस समय जब पौलुस लिख रहा था, कुरिन्थ यूनान के उन कुछ शहरों में से एक था जो भौतिक समृद्धि व्यक्त कर रहा था। यदि कुरिन्थ के

विश्वासी यरूशलेम में गरीब संतों के साथ अपनी समृद्धि साझा करने के लिए तैयार होते, तो शायद बाद में, यरूशलेम के संत कुरिन्थियों की मदद करने की स्थिति में होते, जब वे भी मंदी का अनुभव करते।

पॉल समाजवाद का वह रूप स्थापित करने का प्रयास नहीं कर रहा था जिसे हम जानते हैं या संपत्ति को समान करके कहते हैं, नहीं, बल्कि वह उन विश्वासियों के तीव्र संकट को दूर करने का प्रयास कर रहा था जो भौतिक आवश्यकताओं से पीड़ित थे। जब किसी प्रकार का आत्म-बलिदान करने का अवसर सामने आता है, और प्रभु चाहता है कि हम कार्य करें, तो हमें भी उचित स्वभाव रखना चाहिए और परमेश्वर के निर्देशानुसार उचित कार्य करना चाहिए। इस कार्य में हमारा समय और शक्ति के साथ-साथ धन भी शामिल हो सकता है, लेकिन यह कुछ ऐसा है जिसे हमें करना सीखना चाहिए।

फिर, अध्याय 8 का अगला और अंतिम भाग छंद 16 से 24 है, जहाँ पौलुस तीतुस और अन्य भाइयों के बारे में बात करता है। वह तीतुस और अन्य भाइयों के बारे में बात करता है। उसने कहा, "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिसने तीतुस के मन में तुम्हारे लिए वही लालसा डाली जो मुझमें है।"

क्योंकि उसने न केवल हमारी विनती स्वीकार की, बल्कि चूँकि वह पहले से भी अधिक उत्सुक है, इसलिए वह अपनी इच्छा से तुम्हारे पास जा रहा है। उसके साथ हम उस भाई को भेज रहे हैं जो सुसमाचार सुनाने के लिए सभी कलीसियाओं में प्रसिद्ध है। इतना ही नहीं, बल्कि उसे कलीसियाओं ने हमारे साथ यात्रा करने के लिए भी नियुक्त किया है, जबकि हम स्वयं प्रभु की महिमा के लिए और अपनी सद्भावना दिखाने के लिए इस उदार कार्य को संचालित कर रहे हैं।

हम चाहते हैं कि इस उदार दान के लिए कोई हमें दोषी न ठहराए, क्योंकि हम वही करना चाहते हैं जो सही है, न केवल प्रभु की दृष्टि में बल्कि दूसरों की दृष्टि में भी। और उनके साथ, हम अपने भाई को भेज रहे हैं जिसे हमने कई बार परखा है और कई मामलों में उत्सुक पाया है लेकिन वह अब पहले से कहीं अधिक उत्सुक है क्योंकि उसे आप पर बहुत भरोसा है। जहाँ तक तीतुस की बात है, वह आपकी सेवा में मेरा साथी और सहकर्मी है।

जहाँ तक हमारे भाइयों की बात है, वे कलीसियाओं के संदेशवाहक हैं, मसीह की महिमा हैं। इसलिए, कलीसियाओं के सामने खुलकर उन्हें अपने प्रेम का प्रमाण दिखाओ और हम तुम्हारे बारे में जो गर्व करते हैं, उसका कारण बताओ। आप देखिए, यह पैराग्राफ़ देने के विषय पर और सही काम करने के लिए नेताओं की जवाबदेही के बारे में कुछ अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

परमेश्वर के संतों से धन प्राप्त करने और उसे वितरित करने, धन प्राप्त करने और धन खर्च करने दोनों में उच्च मानक रखना। जब हम विश्वासियों से दान प्राप्त करते हैं, तो जिस तरह से हम उन्हें प्राप्त करते हैं और जिस तरह से हम उन्हें खर्च करते हैं, दोनों ही महत्वपूर्ण हैं।

आप देखिए, जो लोग पैसे संभालते हैं, वे हमेशा जांच के दायरे में आते हैं, चाहे सही हो या गलत। कोई न कोई हमेशा किसी पर पैसे के गलत इस्तेमाल का आरोप लगाने के लिए तैयार रहता है। पॉल के भी अपने विरोधी थे।

उन पर आरोप लगाया गया कि वे चंदे में निहित स्वार्थ रखते हैं। उन्होंने उन पर आरोप लगाया कि या तो वे चंदा ले रहे थे या कम से कम वे इसे अपने प्रचार के साधन के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे। आप इसे श्लोक 20 में देख सकते हैं।

हमारा इरादा है कि हम जो उदार उपहार दे रहे हैं, उसके लिए कोई हमें दोष न दे। इससे पता चलता है कि विश्वासी किसी भी ईसाई समूह, चर्च या संगठन के नेतृत्व से ईमानदारी के उच्च मानकों की अपेक्षा करते हैं, खासकर जब धन प्राप्त करने और वितरित करने की बात आती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि धन का उचित प्रबंधन किया गया था और बेईमानी या अनुचितता की किसी भी उपस्थिति से बचने के लिए, संग्रह परियोजना में शामिल चर्चों ने अपने द्वारा एकत्र किए गए धन के साथ जाने के लिए भरोसेमंद पुरुषों का चयन किया।

तीतुस कुरिन्थ में चंदा इकट्ठा करने के लिए पौलुस का प्रतिनिधि था। उसे सिर्फ़ पैसे में ही नहीं, बल्कि कुरिन्थियों में भी गहरी दिलचस्पी थी। वह जानता था कि उनकी तरफ़ से कंजूसी का रवैया, आगे चलकर उन्हें नुकसान पहुँचाएगा।

इसलिए, आयत 20 और 21 में, हम पौलुस की सोच को देखते हैं। मेरा मतलब है, ये दो आयतें हमारे लिए पौलुस की सोच को दर्शाती हैं। पौलुस और उसके साथी बुरे व्यवहार के आरोप से बचने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं।

आइए हम फिर से उस शब्द पर लौटें जिसे हम अपने पहले व्याख्यान से ही दोहराते आ रहे हैं। ईमानदारी। इस शब्द को याद रखना महत्वपूर्ण है।

वित्त में ईमानदारी। ईमानदारी, वित्तीय प्रबंधन। आप देखिए, ज़्यादातर समय पॉल का यह कहना असामान्य होता है कि उसे इस बात की चिंता है कि लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं।

ज़्यादातर समय, वह किसी भी ज़िम्मेदारी को नकार देता है। तुम मुझे जज करो, मुझे परवाह नहीं। मेरा फैसला भगवान के हाथ में है।

मुझे लोगों की स्वीकृति नहीं मिलती। आप केवल भगवान की स्वीकृति चाहते हैं। लेकिन इस मामले में, पॉल इतना आगे बढ़ जाता है, जितना वह कर सकता है, हर संभव कोशिश करता है ताकि कोई भी दर्शक, चाहे वह ईसाई हो या नहीं, यह देख सके कि वे एकत्रित किए जा रहे धन के साथ जो कर रहे हैं वह पूरी ईमानदारी से किया जा रहा है।

ताकि किसी भी तरह से मसीह के उद्देश्य को बदनाम न किया जाए। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। हमारे समय में, हम ऐसे कई मंत्रियों के उदाहरण जानते हैं जिन्होंने मंत्रालय और खुद को दोनों को गड़बड़ कर दिया है और वित्तीय गबन के कारण मसीह के नाम पर कलंक लगाया है।

आपको याद होगा कि यीशु के शिष्यों के बटुए के वाहक के रूप में यहूदा ने अपने लिए धन का दुरुपयोग किया था। आप देखिए, सदियों से कई बार ऐसा हुआ है जब मसीह के कारण को नेताओं द्वारा अपमानजनक तरीके से देखा गया जो पैसे के मामले में सबसे अच्छे से लापरवाह

और सबसे बुरे से बेईमान थे। तो, पॉल यह सुनिश्चित करने के लिए क्या करता है कि ईमानदारी और ईमानदारी की धारणा दोनों हो? एक बात जो वह करता है वह यह है कि जब भी पैसे का लेन-देन किया जाता है तो नेतृत्व की बहुलता स्थापित करता है ताकि केवल एक व्यक्ति किसी परियोजना का प्रभारी न हो।

इसलिए, वह तीन लोगों को कुरिन्थ भेजता है, और बाद में, एक प्रतिनिधिमंडल उसके साथ जाएगा। जब वह उपहार को यरूशलेम ले जाता है, तो कई लोग देखरेख करते हैं और वित्तीय प्रलोभनों से निपटने में एक-दूसरे की मदद करते हैं, जो बहुत मजबूत हो सकते हैं। इसलिए, संक्षेप में, यह खंड जिसे हमने अभी देखा है, हमें एक महत्वपूर्ण सबक प्रदान करता है।

चर्च के पैसे या मंत्रालय के संचालन में सख्त ईमानदारी होनी चाहिए। सुनो, कैसर की पत्नी की तरह, चर्च में वित्त को संभालने वालों को दोष से परे होना चाहिए। जिस तरह से वित्त को संभाला जाता है वह पारदर्शी होना चाहिए।

मसीह की गवाही को नुकसान पहुंचा है क्योंकि पद 21 का उल्लंघन किया गया है। हाँ, यह सच है कि परमेश्वर जानता है कि हमारे इरादे और उद्देश्य कब ईमानदार हैं, लेकिन यह भी आवश्यक है कि वे साथी विश्वासियों और बाहरी दुनिया के लिए ईमानदार और उचित दिखाई दें। ईसाइयों को वित्तीय मामलों में घटिया व्यवहार से बचना चाहिए।

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 9, 2 कुरिन्थियों 8, देने का अनुग्रह है।